श्रीगुरुमाई द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

से एक उद्धरण

हर प्राणी स्वभाव से स्वार्थी है। हर मनुष्य भी किसी हद तक स्वार्थी है। तुम ऐसा कह सकते हो कि स्वार्थी होना मानवजाति का स्वभाव ही है। तो आधुनिक संसार ने मनुष्य के समय व उसकी शक्ति को सभी प्रतिबन्धों से, अन्य हर चीज़ से और हर व्यक्ति से मुक्त करके, क्या उसे उसकी ही अन्तर्जात करुणा की सामर्थ्य से भी काटकर अलग नहीं कर दिया है? करुणा बहुत सहज-सरल सद्गुण है किन्तु उसके प्रभाव बहुत दूरगामी हैं।

जब तुम यह नहीं जानते कि करुणा की अनुभूति वास्तव में होती कैसी है तो शायद तुम यह भी नहीं समझ पाओगे कि तुम्हें उसकी आकांक्षा क्यों होनी चाहिए। करुणा एक दिव्य मनोवेग है जो किसी के अज्ञान या कष्ट को देखकर तुम्हारे अन्दर उमड़ने लगता है। और मेरा मतलब केवल ऐसे व्यक्ति से ही नहीं है जो शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो। एक महान आत्मा की करुणा के विषय में सोचो। बाबा मुक्तानन्द की करुणा ऐसी विशाल व शक्तिशाली थी कि उनके सान्निध्य में आते ही तुम स्वयं अपने हृदय में प्रवेश कर जाते थे।

ऐसी करुणा इतना आर्द्र कर देती है कि कहा जाता है कि उसे अनुभव करके शिलाएँ भी प्रेमवश रो पड़ती हैं। यह कोई ऐसी भावना नहीं है जो समय-समय पर उभरती व शान्त होती रहती है। जब तुम लक्ष्य तक पहुँचते हो, जैसे बाबा जी पहुँचे थे तो तुम स्वयं करुणा की मूर्ति बन जाते हो। इसलिए, तुम जहाँ कहीं भी जाते हो, सब लोगों को मालूम होता है कि उन्हें सहायता मिलेगी। वे ज्योंही तुम्हारी उपस्थिति को महसूस करते हैं, उसी क्षण वे निश्चिन्तता, गहरी सुरक्षा भी महसूस करते हैं। ऐसा नहीं है कि तुम दो-चार अद्भुत काम करने वाले हो। बस, तुम्हारी उपस्थिति ही बहुत है, क्योंकि तुम हृदय की मृदुलता से, एक प्रेमपूर्ण हृदय से सज्जित हो।

यह चरम करुणा सभी में वास करती है। इसीलिए, सभी महात्मा कहते हैं : अपने हृदय के लोक में आओ। अपने ही हृदय की आभा में स्नान करो। अपने ही हृदय के स्रोत से करुणा के अमृत का पान करो। किसी अन्य स्थान में या किसी अन्य व्यक्ति में करुणा को मत खोजो। यह तुम्हारे अन्दर है। तुम इस महान सद्गुण के स्वामी हो।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ७ "करुणा," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ९९-१००।